Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

आर्य समाज और गुरुकुल व्यवस्था

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

आर्य समाज और गुरुकुल व्यवस्था

Suman Tanwar

Research Scholar, Education, CMJ University, Shillong, Meghalaya

----------X----------

स्वामी दयानंद जी प्राचीन भारतीय परम्परा के समर्थक थे। उनके अनुसार विद्यार्थी को ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करते हुए विद्या अध्ययन करना चाहिये। इसके लिये वे प्राचीन आश्रम व्यवस्था गुरुकुल में विश्वास रखते थे। उनके अनुसार 8 से 25 वर्ष तक विद्यार्थियों को गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करनी चाहिये। इस काल में उन्हें कब क्या पढ़ना चाहिये, इसकी स्वामी जी ने विस्तृत रूप–रेखा तैयार की है। स्वामी दयानंद जी के विचारों एवं शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए स्वामी श्रद्धानंद जी को गुरुकुल खोलने का विचार उत्पन्न हुआ। स्वामी श्र(ानंद एंव आर्य समाजियों ने गुरुकुल व्यवस्था को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी गुरुकुल परम्परा के माध्यम से स्वामी दयांनद सरस्वती जी ने शिक्षा के विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

गुरुकुल का अर्थ :

गुरुकुल का अर्थ है गुरु का परिवार। गुरुकुल की विशेषता उसका पारिवारिक वातावरण ही होता था। छात्रा गुरु के गृह में उसके परिवार के साथ रहकर ही शिक्षा ग्रहण करते थे। वे उसके परिवार का एक अंग बनकर रहते थे। इस प्रकार समस्त छात्रावृंद्ध गुरु का कुल होता था। गुरु हमारे देश की सबसे प्राचीन शिक्षा संस्था है। प्रमुख रूप से गुरुकुल दो प्रकार के होते हैं।

प्राचीन गुरुकुल : प्राचीन गुरुकुल की प्रमुख विशेषता यह थी कि ये नगर से दूर प्राकृति के सुन्दर वातावरण में स्थित होते हैं। छात्रा ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए तथा गुरु की सेवा करते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे। इस प्रकार शिक्षा प्राप्त करना भी एक तपस्या थी।

आधुनिक गुरुकुल : आधुनिक गुरुकुलों का प्रारम्भ स्वामी दयानंद की प्रेरणा से आर्य समाज के संचालकों द्वारा किया गया। उन्होंने भारतवासियों को अपनी प्राचीन संस्कृति की सहायता तथा वैदिक धर्म की विशालता का ज्ञान कराने तथा वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा एवं प्रसार के लिये गुरुकुल स्थापित करने की प्रेरण दी। स्वामी जी की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों ने इस प्रकार को क्रियान्वित किया और शिक्षा के प्रसार के लिये कई गुरुकुल स्थापित किये।

गुरुकुलों की व्यवस्था शहरी शोर–शराबे से दूर प्राकृति के पर्यावरण में स्थित हैं। आठ वर्ष की आयु तक बालकों को प्रवेश मिलता है। गुरुकुलों में वैदिक और संस्कृत साहित्य पर बल दिया जाता है। शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। प्रत्येक विद्यार्थी ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्या ग्रहण करता है। यहाँ शाकाहारी भोजन करना पड़ता है और कठोर अनुशासन में रहना पड़ता है।

गुरुकुल की विशेषताएँ :

प्राकृतिक वातावरण : गुरुकुलों की स्थापना नगरों के कोलाहल से दूर प्राकृति के सुन्दर एवं सुरम्य वातावरण में की जाती है।

जात–पात नहीं : गुरुकुल में प्रवेश के लिये जात–पात अथवा वर्ग भेदभाव नहीं रखा जाता। राजा रंक, पफकीर सबके बच्चे एक साथ एवं एक परिवेश में शिक्षा प्राप्त करते है।

आवास संस्थाएँ : ये संस्थाएँ आवासीय होती हैं।

निःशुल्क शिक्षा : गुरुकुल में शिक्षा निःशुल्क होती है।

प्रवेश आयु : गुरुकुल में आठ वर्ष के बालक बालिकाओं को प्रवेश दिया जाता है।

सादा जीवन : गुरुकुलों में छात्रों के लिये सादा जीवन अनिवार्य है।

ब्रह्मचर्य : छात्रों के लिये ब्रह्मचर्य का पालन निवार्य है। बलिकाओं को भी ब्रह्मचर्य एवं कठोर जीवन का पालन करना पड़ता है।

सह–शिक्षा नहीं : गुरुकुलों में सह–शिक्षा नहीं होती। कन्याओं के लिये पृथक् गुरुकुलों की व्यवस्था है।

पवित्रा सम्बन्ध : गुरुकुलों में गुरु और शिष्य में पिता और पुत्रा के समान मधुर एवं पवित्रा सम्बन्ध होते हैं।

कठोर अनुशासन : गुरुकुलों में कठोर अनुशासन पर बल दिया जाता हैं।

हिन्दी माध्यम : गुरुकुलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी होता है।

वैदिक संस्कृति और राष्ट्रीयता : गुरुकुलों में छात्रों में प्राचीन वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठा, राष्ट्रीयता एवं सामुदायिक भावना का विकास जाता है।

चरित्रा निर्माण एवं स्वास्थ्य : गुरुकुलों में चरित्रा निर्माण एवं शारीरिक स्वास्थ्य को भी बौद्धिक एवं मानसिक विकास के समाज ही महत्त्व दिया जाता है।

www.ignited.in

यज्ञ और प्रार्थना : यज्ञ, प्रार्थना और संस्था आदि गुरुकुल जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। गुरुकुलों में प्रतिदिन सुबह हवन किया जाता है और सुबह और सायं काल संध्या की जाती है।

गुरुकुलों को आर्थिक सहायता देने के लिये श्री जगन्नाथ जी, श्री विश्वदा जी, जा॰ मोहन लाल जी, गोविन्द सिंह जी वर्मा आदि प्रमुख थे। 3 अक्तूबर 1897 की रात्रि में आर्य भाइयों को गोविन्द आर्य समाज के उत्सव पर एक सभा हुई और गुरुकुल शीघ्र खोलने का प्रस्ताव रखा और इसे खोलने में सपफल हुए।

भारत के प्रमुख गुरुकुल :

1. गुरुकुल वृंदावन :
2. गुरुकुल कागड़ी :
3. कन्या गुरुकुल :

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य :

वैदिक संस्कृति का पुनरुत्थान : गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य वैदिक, संस्कृति एवं धर्म का पुनरुत्थान करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये शिक्षा को भारतीय संस्कृति के अनुकूल बनाना है।

शारीरिक एवं मानसिक विकास : गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य मानसिक विकास के साथ–साथ छात्रों का शारीरिक विकास करना है।

चरित्रा का विकास : छात्रों के चरित्रा का विकास करना गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य है। व्यक्ति के चरित्रा को उसके पांडित्य से अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। गुरुकुल के उत्तम वातावरण, सदाचार के उपदेशों, महापुरुषों के उदाहरणों महान् विभूतियों के आदर्शों आदि के द्वारा छात्राों के चरित्रा का निर्माण किया जाता है।

मानवीय गुणों का विकास : मानवीय गुणों का विकास करना भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण है।

नागरिक एवं सामाजिक कर्त्तव्य पालन की भावना का समावेश : इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये छात्राों को विभिन्न प्रकार के उपदेश दिये जाते थे जैसे अतिथियों का सत्कार करना, दीन–दुखियों की सहायता करना, वैदिक साहित्य की निःशुल्क शिक्षा देना, दूसरों के प्रति निस्वार्थता का व्यवहार करना तथा पुत्रा, पिता एवं पति के रूप अपने कर्त्तव्यों का पालन करना।

सामाजिक कुशलता का विकास : छात्राों को रुचि और योग्यता के अनुसार उद्योग या व्यवसाय की शिक्षा दी जाती है। ताकि वे जीविका का उपार्जन करके अपने सुख की वृद्धि कर सके।

सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास : छात्राों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उनमें आत्म–सयंम, आत्म–सम्मान, आत्म–विश्वास आदि सद्गुणों को उत्पन्न किया जाता है। साथ ही उनमें विवेक, न्याय और निष्पक्षता की शक्तियों को जन्म देकर उनको बलवती बनाया जाता है।

राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार : राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार करना भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

ईश्वर भक्ति एवं धार्मिकता का समावेश : छात्रों में ईश्वर भक्ति और धार्मिकता की भावना का समावेश करना भी गुरुकुल शिक्षा प्राणाली का प्रमुख उद्देश्य है। प्राचीनकाल में उसी शिक्षा को सार्थक माना जाता है, जो इसे संसार से व्यक्ति की मुक्ति को सम्भव बनाए–'सा विद्या या विमुक्तये' व्यक्ति को मुक्ति तभी प्राप्त होती है जब वह ईश्वर–भक्ति और धार्मिकता की भावना से ओत–प्रोत हो। छात्रों में इस भावना को व्रत, यज्ञ, उपासना, धार्मिक उत्सवों आदि के द्वारा विकसित किया जाता था।

गुरुकुल व्यवस्था खोलने के साथ–साथ आर्य समाज द्वारा उच्च शिक्षा अर्थात् उच्चतर विद्यालय और महाविद्यालयों के विकास में भी अपना पूर्ण योगदान दिया समाज में गुरुकुल व्यवस्था द्वारा हर जाति के बच्चों को शिक्षित करने के हर सम्भव प्रयास किये। आर्य समाज द्वारा शिक्षा के भरसक प्रयास किये गये। सैंकड़ों प्रचारकों और भजन उपदेशकों ने शिक्षा के प्रसार के लिये चारों ओर भ्रमण किया और इन्होंने लोगों को शिक्षित करने में विशेष भूमिका निभाई।

परिणाम स्वरूप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों से आर्य समाज ने लोगों के मन और दिमाग में शिक्षा को प्रकाशमय ज्योति के प्रज्ज्वलित किया। कापफी संख्या में आर्य समाज ने स्कूल, गुरुकुल और पाठशालाएँ खुलवायी।

आर्य समाज द्वारा निर्मित संस्थाएँ :

आर्य समाज ने स्त्राी शिक्षा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आर्य समाज के अनुसार पुरुष से ज्यादा स्त्राी के लिये शिक्षित होना अति आवश्यक हैं, क्योंकि पुरुष को शिक्षित करना केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करना होता है। परन्तु एक स्त्री को शिक्षित करने का अभिप्राय है एक पूरे परिवार को शिक्षित करना। एक परिवार के अच्छे भविष्य एवं स्वरूप लालन–पालन के लिये नारी का शिक्षित होना आवश्यक रूप से अनिवार्य होना चाहिये।

आर्य समाज के द्वारा शिक्षा के उन्नत बनाने के लिये भरसक प्रयास किये गये। सैंकड़ों प्रचारकों और भजन उपदेशकों ने शिक्षा के प्रसार के लिये चारों ओर भ्रमण किया और इन्होंने लोगों को शिक्षित करने में विशेष भूमिका निभाई। हरियाणा में श्री बस्तीराम ने विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्रा में भूमिका निभाई।

परिणाम स्वरूप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों से आर्य समाज ने लोगों के मन और दिमाग में शिक्षा को प्रकाशमय ज्योति के प्रज्ज्वलित किया। कापफी संख्या में आर्य समाज ने स्कूल, गुरुकुल और पाठशालाएँ खुलवाई।

www.ignited.in